आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 19/04/2026; Revised: 26/04/2026; Accepted: 24/06/2026; Published: 28/06/2026

वर्त्तमान समय में साहित्य द्वारा, स्त्री उत्थान क्यों और कैसे ?

डॉ . रंजना पाटिल

प्राचार्य

अक्कमहादेवी महिला महाविद्यालय बीदर

डॉ . रंजना पाटिल, वर्त्तमान समय में साहित्य द्वारा, स्त्री उत्थान क्यों और कैसे ?, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(187 -191)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21441238

प्रस्तावना :- मराठी लेखक मनोहर काले की कहानी – नाम याद नहीं लेकिन कहानी कभी नहीं भूली – एक वैज्ञानिक ने संवेदनामापी यंत्र बनाया है | प्रयोग के लिए उसने विषय को आसन पर बैठकर उसके मस्तिष्क हृदय कलाई आदि स्वंदनबिंदु वाले अंगों को तार से यंत्र के साथ जोड़ दिया है | इसके बाद प्रयोगशाला के एकांत में उसके कानों में दुखित पीड़ित ध्वनियों का रिकार्ड बजाया जाता है | इन ध्वनियों में दु:ख का ग्राफ उत्तरोत्तर ऊँचा होता गया है और प्रयोगशाला के नियंत्रित निर्बाध वातावरण में विषय के पास पूरा अवसर है की वह इन ध्वनियों के साथ एकात्म होने के लिए स्वयं को खुला छोड़ दें| आर्तनाद के कुल बीस स्टार है और प्रयोग के विषय भी कुल बीस ही है | आह, कराह, हिचकी, सिसकी, हाहाकार प्रार्थना पुकार इत्यादि से गुजरते हुए कुल उन्नीस स्तरों तक विषय की पीड़ा के सात तादात्मक घना होता जाता है धड़कन बढती है, गला सूखता है , ओठ कापते है, ऑसू आते है इत्यादि लेकिन बीसवे स्तर के आते ही दू:खजन्य तनाव के सभी चिन्ह गायब हो जाते है स्नायु शीथिल, माँसपेशियाँ विश्रांत उद्वेग शांत | वैज्ञानिक चकित होता है क्यूंकि बीसवी अवाज तो सबसे अधिक करुण थी | वह बार बार अपना प्रयोग बीस बीस की संख्या में जाती

धर्म, आयु वर्ग आदि के दृष्टी से भिन्न भिन्न अनेक विषय समूहों पर दोहराता है | लेकिन नतीजा वही रहता है | अतंत: वह अपने उद्दीपनो की समिक्षा करता है और पाता है की बीसवी उद्दीपन स्त्री का अर्तनाद था जब कि उसके पहले की उन्नीस आवाजे पुरुषो की थी |

शब्द संग्रह : प्रस्तावना , विषय विवरण, स्त्री विमर्श के सहित्य के रूप, स्त्री विमर्श अपने विरुध्द, निष्कर्ष

विषय विवरण : स्त्री विमर्श को भिन्नतओं का समारोह कहा जा सकता है | पितृसत्ता से उसके विरोध का आरंभ ही इस बिंदु से होता है की स्त्री को उसके भिन्नता का दंड देते हुए पितृसत्ता उसे इतिहस के बाहर धकेलित है |

इस व्यापक विशेषिकरण के भीतर अन्य विशिष्ट विशेषिकरण भी संभव है | जैसे फ्रेंच, अमेरिकी या अंग्रेजी स्त्रीवमर्श भाषा मूलक व रष्ट्रीयातामूलक विशेषिकरण अश्रवेत या दलित स्त्री – विमर्श में जतिमुलक विशेषिकरण, साहित्यिक सैध्दांतिक स्त्री विमर्श में विषय मूलक विशेषीकरण इत्यादि | प्रसंगवश कहा जा सकता है रॉबिन मोरगन ने १९७० में सिस्टरहुड इज पावरफुल ऐन एन्थालोजी आफ रायटिंगज फाम्ज द विमेंस लिबरेशन मूवमेंट शीर्षक से अमरीका में अंग्रेजी लेखन की एक सूचि तथा एक संपर्कसूत्र सूचि संपादित और प्रकाशित की थी |

मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, राजी सेठ आदि महत्वपूर्ण वरिष्ट लेखिका और निर्मला जैन जैसी प्रतिष्ठित समालोचिका अपनि प्रखर अलोचनात्मक बुध्दि ओर रचनात्मक क्षमता को किसी विमर्श विशेष के संकुचित दायरे में बांधने से इनकार करती है, लेकिन यह देखने की जरुरत है की उनकी अस्वीकृति और असहमति भी स्त्री के संघर्ष को देखने की एक भिन्न दृष्टी तथा स्त्री विमर्श के दायरों को परिभाषित करने में भागीदारी हो सकती है |

ऐलेन शोवोल्टर ने स्त्रीवादी आलोचना में सक्रीय छ: कार्यक्रम रूपायित किये है |

1) तथा कथित सार्वभौमिक साहित्य सिद्धांत में निहित लैंगिकता की अनुपस्थिति और पुल्लिंग प्रधानता की समीक्षा,
2) पित्तृसत्ता संस्कृति की स्त्रीवादी आलोचना,
3) स्त्रीवादी संस्कृति का उत्सव मनाते हुए स्त्रीवादी लेखक में सौन्दर्य शास्त्र की तलाश,
4) स्त्री लेखक की परंपराओं का अध्ययन,
5) उत्तर संरचनावादी आलोचना का स्त्रीवादी संस्करण जो उपल्ब्ध पाठविधियों के सहारे बृहत संस्कृति के भीतर एक कोटि अथवा उपसंस्कृति के रूप में स्त्रीत्व पर केन्द्रित कराती है,

6) यौनिक भिन्नताओं के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा लैंगिकता के सिद्धांत का विकास | सामाजिक पदानुक्रम में पुरुष की कमना शक्तिशाली है | लाका के अनुसार कमाना की शक्ति का प्रतिक लिंग है लिंग का प्रतीकार्थ उसके वास्तविक अर्थसन्दर्भ पुरुष यौनांग का अतिक्रम करता है | शक्ति कचिंह होने के कारण लिंग अतिशय 'काम्य' है | तभी तो जिसके पास वह है | यानि लड़का कभी था ही नहीं के अहसास से बेचैन रहते है | एक में यह सत्ता खो बैठने का भय तथा दुसरे में वंचित राह जाने की बेचैनी है |

स्त्री विमर्श के साहित्य रूप :

अस्मिता विमर्श के एनी प्रकारों की तरह स्त्री विमर्श के लिए भी, एनी प्रचलित परंपरागत साहित्य रूपों के आलावा आत्म कथात्मक कोटि का लेखन अपने निजी साहित्य रूप की तरह विकसित हुआ | इसमे औपचारिक साहित्य रूप की तरह आत्मकथा के आलावा अनौपचारिक रूप से पत्र, डायरी, स्मृति लेख और निजी टिका टीप्पणीयो को भी शामिल किया जा सकता है | पश्चिम में आत्मकथात्मक साहित्य की बहुतायत है अत: विशलेषणऔर सिद्धान्तिकरण के लिए एक संपूर्ण वृतांत कोटि सहित्यिक सिद्धांतकार को उपलब्ध है | एलेन सियु के आव्हान का उत्तरें देने की इच्छुक स्त्री के लिए आत्मकथा एक सुलभ और साध्य माध्यम है, क्योंकि यह एक ऐसी है जो हममें से हर एक को कथाकार बना सकती है |

आत्मकथा में किसी के भीतर का 'अस्मि' और बहार का संसार परिवार, समुदाय और संस्कृति एक साथ विभक्ति और संपृक्ति के दोहरे बंधन में बाँधा है स्थिति उस किसी के आत्म को भी विभाजित करती और दोहरा चरित्र देती है | स्त्री वादी विमर्श के लिए यह दस्तावेज मूलभूत सवाल में उल्झा हुआ है की स्त्री का आत्म अगर हमेशा एक सामाजिक संस्थानिक गढ़ंत है | पितृसत्ता के कायदे कानूनों को आत्मसात करके स्वयं अपने विरुध्द दमन की तानाशाही अवजार बन चूका है | तो स्त्री की आत्मकथा में उसके अपने अंत की खोज या उसकी निर्मिती की प्रक्रिया की तलाश कैसे संभव होगी ?

आत्म क्या सामाजिक संस्थानिक के विरुध्द वैक्तिक और आत्मपरक की विजय है | उसकी सत्ता क्या शून्य में होती है | समाज के प्रति समर्पण की मांग क्या व्यक्ति के प्रति अन्याय है |

आत्मकथा जगत में स्त्री का प्रवेश अभी नया है | पुरुष की आत्मकथा उसके आश्वस्त अहं का साक्ष्य है| स्त्री का आत्म बोध संकोची, संशयग्रस्त और निर्मिती की प्रक्रिया में है | निर्मिती की प्रक्रिया का अर्थ क्या अनिवार्यत: स्त्री चेतना का उदय है |

इस औपचारिक व् अनौपचारिक आत्मकथात्मक कोटि के अलावा के और प्रकार से आत्मतत्व स्त्री विमर्श को स्पर्श करता है | इसे परंपरागत आलोचना की स्थापित एवं रूढ़ तटस्थता और निरपेक्षता के छद्मवेश में लिंग निरपेक्ष पुल्लिंगप्रधान रुझान के विरुध्द स्त्री विमर्श का अग्रसरण कहा जा सकता है | इसे 'पर्सनल इज पोलिटिकल' के विचार की सक्रीय परिणति और कार्यान्वित भी समझा जा सकता है |स्त्रीवादी आलोचक और सिद्धान्तकार वैचारिक विमर्श में भी कई बार स्वयं अपनी आवाज में बोलती है | कई बार तो इसका कारण यह है की सिधांतकार के साथ एक सैधान्तिक विरोध के कारण उनका वैचारिक विमर्श निकलता ही उनके अपने व्यक्तिगत अनुभवों, विचारों और धारणाओं में से ही लेकिन कई बार अधिक विश्लेषण पध्दतियों और वैचारिक औजारों से लैस स्त्रीवादी आलोचक भी ऐसा कराती है की वै अपनी रूचि से जुडी कोई बात, कोई स्मृति, कोई घटना बे झिजक अपने वैचारिक विमर्श के बिच ले जाती है | कभी कभी अन्यथा औपचरिक गद्य में भी आत्मस्वीकृति के क्षण आ खड़े होते है | इस नए प्रकार के सैधान्तिक लेखन में आत्म तत्व और विद्वता इस तरह घुल मिल जाते है की विद्वता अपना परंम्परागत अधिकारिक स्वर छोड़कर प्रस्तावना और सुझाव की आत्मीय आवाज में बात करती है |

स्त्री विमर्श अपने विरुद्ध:

देह और मन, कमाना और भाषा की इस चुगल बंदी में से निकलनेवाले सवाल अंतत: फ्रांस के ल क्रितुर फ'मीनिन को खालिस स्त्री प्रदेश के बाहर ले गयी है | कमना क्या लिंग के अनुसार अलग अलग है? एक रूपता और भिन्नता की हमारी समज क्या कमाना के द्वारा प्रभावित होती है ? कमना राजनीतिक ताकत से कैसे जुड़ जाती है ? साहित्यिक प्रस्तुति में दैहिक / राजनीतिक कमाना की अभिव्यक्ति कैसे होती है |

इस भिन्नता की पाक स्वीकृति के कारण कहा जाता है की मातृसत्ता का व्यवहार स्वभावत: और अनिवार्यत: सकारात्मक रूप से करेगी जब की ऐसा मन लेने का कोई प्रमाणित अधार नहीं है | सबलीकरण में अतंर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के इन वर्ष के दौरान यानि हालही के इतिहास में सत्ता पानेवाली औरतों ने ऐसा कुछ साबित नहीं किया है | स्त्री की कमना यदि सचमुच ही तत्वत: भिन्न है तो शायद वह भिन्नता व्यायोचित प्रतिशोध परायणता के भ्रम में और भी अधिक आतंक और भयंकरता की सामर्थ्य है |

कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा,कृष्णा अग्नीहोत्री, मृदुला गर्ग, गीतांजलि, ममता कालिया , रजिसेठ,

मेहरुन्निसा परवेज, प्रभा खेतान आदि लेखिकाओ ने वैचारिक क्रांति का अहवान करते हुए व्यक्तिवादी चिंतन को मूल लक्ष्य मानकर अपने असितित्व बोध की सार्थकता को स्थापित करते है | सफल स्त्री लेखन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ज्ञानापिठ विजेता महादेवी वर्मा लिखती है –

नारी केवल मॉस पिंड की संज्ञा नहीं आदिकाल से लेकर आज तक विकास पथ पर पुरुषों का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर उसके अभिशापों को झेलकर और अपने बरियनों से जीवन में अक्षय शील भरकर मानव के किस व्यक्तित्व चेतना और ह्रदय का विकास किया है

उसी का पर्याय नारी है | "रचती हर डगार से नया संसार जिसमे वह अति जाती है वहिजो वह है गति मीठे स्वर में गीत समुद्र के लिए सच है स्त्री इस विश्व में जैसे मृत्यु सौन्दर्य जैसे "पितृ सत्तात्मक समाजों में पुरुष की कम्पिपासा के लिए विवाह संस्था से लेकर वेश्यावृत्ति और व्यभिचार के सभी दरवाजे खुले छोड़ दिए गए है इस व्यभिचार का शिकार अधिकांश लड़कियों को अंतत: वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में ही शरण लेनी पड़ती है | भारत में लगभग चालीस लाख से अधिक महिलाएँ बच्चियाँ इस वृत्ति में झोक दी गई या इस वृत्ति को अपनाने के लिए मजबूर है | भारतीय व्यवस्था पर पुरुष वर्चस्व इतना हावी है भारत में स्त्री आजाद भी रहे तो भी वह दोयम दर्जे की ही समझी जाती है |अगर वह अपनी स्वतंत्रता अपनी आजादी चाहती तो यह लड़ झगड़ कर ही संभव है | कथाकार मैत्रेयि पुष्पाने युवा महिला पुलिस पर एक मात्र उपन्यास गुन्नाह बेगुन्नाह में इला व् समीना जैसों की कई बच्चियों की आप बीती को बाया किया है | जब भद्र परिवार की चौ हद्दी तोड़कर इला चौधरी विवाह न कर पुलिस कांस्टेबल बन जाती है | उसके बारे में सोचा गया की वह अपने पैरों पर कड़ी होने के लिए नहीं किसी के साथ भागने के लिए गई है | इस उपन्यास में मैत्रेयि पुष्पा ने स्त्री देह मिथ को भी तथा यथार्थ को भी बड़े ही ठस्से के साथ –इला जो अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है, पुलिस में भारती होती है | वहाँ बचियो पर पुरुष पुलिस कर्मी द्वारा किए जानेवाले अत्याचारों से वह रु-ब-रु होती है | रेशमा जो अपने पिता द्वारा ही बलत्कार का शिकार बनती है | इला, समीना, रेशमा आदि लड़कियों के माध्यम से समाज में बच्चियों के हनन का ब्योर प्रस्तुत किया है | स्त्री विमर्श को देह विमर्श तक सिमित करना पुरुष सतात्मक समाज की साजिश है।

निष्कर्ष :

इसी जगह पर ईव कोफोस्की सेजविक के द्वारा प्रस्तावित स्त्री विमर्श की नई भूमिका के विचारों को जोड़ा जा सकता है | इन संभावनाओं से विचारणीय पति है | बुनियादी प्रश्न की जगह पर लैंगिकता को रखने वाले अमूल एवं उग्र स्त्रीवादी को तथा अर्थव्यवस्था व् शक्ति संबंधों को बुनियादी प्रश्न समझने वाले मार्क्सवाद को कितनी दूर तक जोड़ा जा सकता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

इक्कीसवी सदी में नारी अधिकार एवं कल्याण

श्रीमती वन्दना सक्सेना

****